# प्रवासी साहित्य और डायस्पोरा

**डारु चंचल बाला**
**ऐसोसिऐट प्रोट्ठसरध् हिन्दी विभाग**
**खालसा कारुलेज गारुर विमन**
**अम!तसरब**

प्रवासी साहित्य पर बात करते हुए **प्रवासी** शब्द को समझना अति आवश्यक है। वासी, आवासी, प्रवासी, अप्रवासी शब्द को अलगाया जाये तो 'वासी' शब्द उस व्यक्ति के लिए या व्यक्तियों के समूह के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो पीढ़ियों से स्थाई रूप से किसी देश की नागरिकता ले कर रह रहे है। उसके कई पूर्वज इसी धरती पर रह चुके हैं। दूसरी तरफ **आवासी** शब्द **वासी** के विपरित है। **आवासी** शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति व व्यक्तियों के समूह के लिए किया जाता है, जो किसी अन्य धरती का वासी है, लेकिन संबधित धरती पर किसी तलाश में आया है। आवास अस्थाई प्रकृति का होता है। आवासी का अपनी धरती पर लौटना निश्चित होता है।

**प्रवासी** शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो **रोजी रोटी की तलाश में अनिश्चितकाल के लिए बेगानी धरती पर विचरण करता हैं। उसका यह विचरण, भटकाव ही है जो उसे कही भी स्थिर नहीं होनें देता। ऐसी स्थिति में उसकी मानसिकता संतुलित नहीं हो पाती। उसके सामने उसका वर्तमान, भविष्य सब कुछ अनिश्चित व अस्थिर होते हैं। वह अजनबीपन, अलगाव, अस्थिरता, अविश्वास, असंतुलन की जिन्दगी भोगता हुआ, अपने घर तथा सम्बन्धों के प्यार व अपनत्व से दूरी के अहसास को भोगता हुआ, न तो पूरी तरह से अपनी जड़ों से जुड़ पाता है और न ही दूसरे देश में अपनी जड़े स्थापित कर पाता है। वह लगातार मन परदेशी जो थीअै सब देश पराया, किस पै खोलूं गंठरी, दुखी भर आया** की भावना से दो चार होता हुआ बहुमुखी संताप भोगने के लिए विवश होता है। दूसरी तरफ **अप्रवासी** शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है, जो बाहर किसी दूसरे देश से आया है। जैसे भारत में आने वाले विदेशी लोग अप्रवासी कहे जाएंगे।

**वासी, आवासी प्रवासी, अप्रवासी को डायस्पोरा (Diaspora) के संदर्भ में समझना भी आवश्यक है। जब एक ही मूल के लोग दुनिया के अलग–अलग कोनों में जाकर बस जाते है– उसे डायस्पोरा (Diaspora) कहा जाता है। वे लोग उन सम्बन्धित प्रदेशों के वासी भी बन सकते हैं, आवासी भी, और प्रवासी भी।** जैसे भारत के लोग कैनेडा, अमेरिका, इग्लैंड, इटली आदि देशों में जाकर रहने लगे, बेशक वे रोजी रोटी की तलाश में गए हो या किसी अन्य कारण से, लेकिन मूल रूप में भारतीय होने के कारण वे डायस्पोरा (Diaspora) के अन्तर्गत आएंगे। इसका प्रयोग शुरू में यहुदियों के लिए किया गया था, जो अलग–अलग देशों में फैल गए थे।

**प्रवास पर जाने की परम्परा एवं उससे संबधित साहित्य सृजन हिन्दी में अनादिकाल से है। हिन्दी में अधिकांश साहित्य श्री राम के प्रवास, श्री कृष्ण के प्रवास के साथ–साथ महाभारत में पाण्डवों के प्रवास को आधार बना कर लिखा गया। यह प्रवास काल जहाँ प्रवासियों के लिए अत्यंत कष्टप्रद और नई समस्याओं से युक्त रहा वही पीछे छूटे इनके बंधु बान्धवों के लिए भी जीवनधारा को बदल कर रस देने वाला रहा। आधुनिक काल में 'प्रवासी चेतना' का यद्यपि कारण भी अलग है और परिणाम भी अलग लेकिन प्रवास का दर्द सामान है।**

**प्रवास** या **प्रवासी** शब्द अत्यंत व्यापक भी है। आवश्यक नहीं कि यह प्रवास एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में ही हो। भारत जैसे विशाल, बहुभाषी, सांस्कृतिक दुष्टि वाले देश में तो एक राज्य से दूसरे राज्य में भी प्रवास के इस द्वन्द्व, देश एव दर्द को महसूस किया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि अपने घर–परिवार, देश–राष्ट्र, समाज–संस्कृति से दूर रह रहे व्यक्ति को प्रवासी कहा जा सकता है। क्यों कि अपनी मिट्टी से दूर रहने वाले व्यक्ति के अनुभव, समस्याएँ और विचार बिल्कुल अलग होंगे इसलिए उनके द्वारा रचे गये साहित्य में प्रवृतिगत, अनुभवगत और विचारगत, अंतर एवं विलक्षणता होगी इसीलिए इस प्रकार के साहित्य को **प्रवासी साहित्य** की संज्ञा से अभिहित किया जाना समीचीन प्रतीत होता है।

आज प्रवासी भारतीय विश्व के 48 देशों में फैले हैं। लाखों की संख्या में विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय वहां की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधत्व भी करते हैं और इन देशों की आर्थिक राजनैतिक नीतियों को दशा और दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा रहे है। **प्रवासी भारतीय मजदूर, व्यापारी, शिक्षक, अनुसंधानकर्त्ता डॉक्टर, वकील, प्रबंधक, प्रशासक आदि के रूप में पूरे विश्व में स्वीकृत है। अपनी परिश्रम प्रवृत्ति, लगन और शैक्षणिक योग्याताओं के कारण उन्होंने वहाँ विशिष्ट स्थान बनाए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की छवि ने प्रवासी भारतीयों का कद ऊँचा कर दिया।**

प्रवासी भारतीयों की हिन्दी कहानी साहित्य के प्रति प्रतिबद्धता उनके संकलन, देश और नेट की भिन्न पत्रिकाएं और ब्लॉग स्पष्ट करते है। प्रवासी महिला कहानीकारों की इस विधा को देन अप्रतिम है। प्रवासी महिला कहानीकारों का विश्व में अपना मुकाम है। उषा प्रियंवदा से लेकर समकालीन साहित्यकारों तक सभी ने साहित्य की अनवरत सेवा की है, भाषा का प्रचार प्रसार किया है। हिन्दी को विदेशियों के लिए ग्रहणीय बनाया है। इनकी कहानियों में स्वदेश की मिट्टी की सौंधी खुशबू पश्चिमी बयार के साथ मिलकर मलयानिल हो उठी है। इस शृंखला में पाँच प्रमुख प्रवासी साहित्यकारों की कहानियों पर चर्चा करुँगी जो है– **उषा राजे सक्सेना, उषा प्रियम्वदा, दिव्या माथुर, अर्चना पेन्यूली, सुषम बेदी।**

**उषा राजे सक्सेना–**

इंग्लैड में बसी उषा जी हिन्दी के प्रचार–प्रसार से जुड़ा एक स्थापित नाम है। ब्रिटेन से प्रकाशित पुरवाई पत्रिका की सह सम्पादिका तथा हिन्दी समिति यू.के. की उपाध्यक्ष हैं। ब्रिटेन के हिन्दी साहित्य में चर्चित प्रवासी लेखिका उषा जी बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। उषा राजे सक्सेना की **प्रवास में** कहानी इंस्टीट्यूशनल रेसिजम पर आधारित है। कहानी एक ऐसे परपफैक्शनिस्ट, निष्ठावान व्यक्ति की है, जिसे विदेश में अंततः नस्लवाद का शिकार होना पड़ता है। कथानायक भाषांक कुछ करने और बनने की कामना लेकर विदेश की धरती पर आया है। ब्रिटिश सिविल सर्विसेज में उसने आवेदन दिया है। वह अंग्रेज महिला मित्र, जो एक मनोचिकित्सक भी है से

अक्सर परसनैलिटी डिवलमेंट के टिप्स लेता है। 'सेंटलमेंट इन यूके' आदि विषयों पर अक्सर चर्चा और अध्ययन करता है। अपनी अनथक मेहनत के बल पर ब्रिटेन में ऊँचे पदों पर पहुंचता है, जहां तक कोई प्रवासी न पहुंच न सका। अब अंग्रेज तक उससे मीटिंग्स को ललायित रहते है। परन्तु अपनी मेहनत, लगन और ज्ञान प्राप्त करने की साकारात्मक ऊर्जा वाले भाषांक की यही शिष्टता, बौद्धिकता भीड़ से अलग दिखने की चाह उसके शत्रु खड़े कर रही है। अंग्रेज उसे ब्लडी वर्कोहॉलिक और प्रवासी भारतीय सहकर्मी उसे अंग्रेजों का पिट्ठू कहते है। उसकी उन्नति दोनों वर्गों की आंखों की किरकिरी है। फलतः उस पर आरोप लगा नौकरी से अनिश्चित काल के लिए निलंबित कर दिया जाता है। **कहते है सफलता पाना आसान है परन्तु उसे कायम रखना बेहद मुश्किल। चोटी की नोक बहुत ही संकरी होती है। एक समय पर एक ही विजेता हो सकता है।** सभी इसी ताक में है कि भाषांक की हल्की सी असावधानी अन्यों की सफलता हो जाए और यही होता भी है। सीधा सरल सावधान व्यक्ति प्रवासी होने के कारण इन्स्टीट्यूशल रेसिजम का शिकार हो अवसाद के अंधेरों में खो जाता है।

## उषा प्रियंवदा

प्रवासी महिला कहानीकारों में प्रथम नाम उषा प्रियंवदा का ही आता है। हिन्दी और अंग्रेजी में एक सा अधिकार रखने वाली उषा जी की कहानियों का परिवेश अमेरिकन है, परन्तु मानसिकता भारतीय। इनकी कहानियों में भोगे हुए यथार्थ की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। **सम्बन्ध** कहानी में मानवीय अनुभूतियों के साथ–साथ मानव की आतंरिक दुर्बलताओं को उजागर किया गया है। कहानी का नायक सर्जन डाक्टर है, जिसका जीवन अस्पताल में चल रहे कार्य–कलापों तक सीमित है। श्यामला अनुवादिका के रूप में काम करती है, वह किसी से बंधना नहीं चाहती। वह सहदया भी है। सर्जन द्वारा अस्पताल में एक लड़की की मृत्यु की खबर उसे अन्दर तक हिला देती है। वह लड़की आबार्शन के लिए उसके पास आई थी पर उसने मना कर दिया था। लड़की ने सुइसाइड कर ली। श्यामला इसकी जिम्मेवार स्वयं को समझती है कहती है– **तुम बराबर जानते थे न, कि मैं गलत हूँ। मैं इतने दिनों तक झूठ की**

**आड़ में रहती रही, लोगों को हर्ट करती रही और तुम्हें भी, पर मेरा यह अनइनवौल्मेंट यह निस्संगता केवल पलायन है, अब सुनीता मर चुकी है और मेरे पास एक गहरी गिल्ट बची है।** सुनीता की मृत्यु श्यामला को संत्रस्त कर देती है।

## दिव्या माथुर

1985 में लंदन में भारतीय उच्चायोग से जुड़ी दिव्या माथुर रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स की फैलो रही है। लंदन में कहानियों के मंचन की शुरूआत भी दिव्या जी से हुई है। दिव्या माथुर की कहानी **निशान** की रानी पति के साथ विदेश में रह रही है और यहां पति बलबीर के हाथों कई बार पिट कर, तंगी सह कर भी और जान कर भी कि वह विदेशी लड़कियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखता हैं, घर में कुछ कमाई भी नहीं देता फिर भी उसके साथ ही रहने को आतुर है और आधी रात को भारतीय आंटी को तरले–मिन्नते करती है कि वह उसके साथ बलबीर को ढूढ़ने चले। रानी अकेली नहीं जा सकती क्योंकि उसे कार चलानी नहीं आती। **उस आंटी के रूप में दिव्या स्वयं भी पाठक को समझाती है कि नीला निशान रानी के गले व चेहरे पर पति के झन्नाटेदार थप्पड़ों के हो या फिर संवेदनशील क्षणों में संवेगों की अधिकता के हों यह निशान भारतीय नारी रानी को सदैव प्रिय है। फैसला** की भारतीय सास अमृत पहले ब्रिटिश बहू रेयल से सामंजस्य नहीं बिठा पाती किन्तु फिर अपने दुराग्रहों को दूर कर अपने पोती–पोते व बेटे बहू को समर्पित हो जाती है अपने पोते **शौन** को भारतीय नाम **शान** तथा पोती **कारा को राका** कह कर पुकारती है। **परिस्थितियों से समझौता और परिवार को बिखरने से बचाने के लिए चाहे आर्ट ऑफ लिविंग वालो को समझाने पर ही अमृत का रेयल सॉरी कह देना पाठक के मर्म को छू जाता है।**

## अर्चना पेन्यूली

डेनमार्क में रह कर स्वतन्त्र हिन्दी लेखन में हिन्दी लेखिका अर्चना पेन्यूली की कहानियां सुखान्त दृष्टिकोण से प्रस्तुत होती है। अर्चना पेन्यूली की **बदल जाती है जिन्दगी** कहानी प्रेम व रोमांस के साथ भारतीय जीवन मूल्यों पर ही टिकी कहानी है जो भारतीय स्त्री के भावनात्सक सहारे की कालजयी इच्छा को खुले आम अभिव्यक्ति

देती है। उम्र व अवस्था कोई भी हो यह सहारा भारतीय नारी की आन्तरिक इच्छा एवमं अनिवार्यता होती है और जिस पर विदेश का अकेलापन मंजूषा को विधवा होने के कई वर्ष पश्चात् और दो युवा बच्चों की माँ एवं सफल उच्च पर प्रतिष्ठित ऑफिसर महिला होने के बावजूद विधुर प्रभाष के प्रति इतना आसक्त कर देता है जिससे वह उससे शादी करने को तत्पर हो जाती है। **वह आशंकित है तो हज़ारों मीलों दूर बैठे अपने भारतीय समाज में अपने भारतीय सम्बन्धियों से, अपने बच्चों से जो उसकी इस उम्र में शादी के विषय में सुन कर न जाने क्या प्रतिक्रिया देंगे? उसे विदेशी संस्कृति का कोई भय नहीं की वहां के लोग क्या कहेंगे? इस से नितांत लापरवाह मंजूषा केवल संस्कारों से आश्वस्तता चाहती है।** यहां लेखिका वर्षों डेनमार्क में बसने के बावजूद आधार रूप में भारतीय ही रहने का प्रणाम है कि उसकी नायिका अपने बच्चों को पत्र लिख कर उनसे पुनः विवाह की अनुमति मांगती है। **पत्र के उत्तर न आने तक वह अनेक प्रकार के द्वन्द्व से गुजरती है पर अपने परिवार तथा बच्चों से साकारात्मक उत्तर प्राप्त कर हर्षमिश्रित आश्चर्य से भर जाती है, पूर्ण आश्वस्त होती है और उसे लगता है जिन्दगी बदल रही है।** विदेश में अकेलेपन, संत्रास, हताशा, कुंठा, एवम अपनेपन का अभाव इन परिस्थितियों का अर्चना जी ने मनोवैज्ञानिक स्तर पर वर्णन किया है।

## सुषम बेदी

सुषम बेदी का जन्म पंजाब के फिरोजपुर जिले में जुलाई 1945 को हुआ। वह रंगमंच, रेडियो, दूरदर्शन एवं रंगमंच की अभिनेत्री रही है। सुषम बेदी की **खुल जा सिम सिम** में नारी उत्पीड़न एक नए रूप में आया है। यहां रेवा के अन्दर चीखते अंगारों जैसा भीतरी कोलाहल और बेचैनी भरने के लिए पति अविनाश ने बेटी अनु को भी मिलाया हुआ है। बेकार पति घर में रहता है और रेवा दो नौकरियों के साथ–साथ घर भी संवारती–संभालती है। जैसे ही वह रिटायरमैंट लेती है, तो पिता पुत्री के मध्य अवैध रिश्ते उसे क्रोध, रोष और क्षोभ से भर देते हैं। वह देखती है कि **बेटी उसकी सौत बन चुकी है। दोनों तीन–तीन दिन घर से बाहर भी रहते हैं। गालियां घर की हवा में भर गई है। स्थितियां यहां तक बढ़ जाती है कि रेवा को**

**तलाक लेना पड़ता है। अपने नैतिक बोधों के कारण वह जज को नहीं समझा पाती कि बेटी की रक्षा के लिए उसे पशु पिता से बचाना अनिवार्य है और इस उत्पीड़न को नियति समझ कर छटपटाती रहती है।**

सुषम बेदी कृत **झाड़** कहानी में बच्चे सैम का सबसे अलगाव का कारण उसके माता–पिता का काम करना है और वह अपना अधिकांश समय बेबी सीटर के साथ रहता है। माँ अन्विता बेटे के इस अकेलेपन और उसके स्वयं से दूर होते जाने को अनुभव करती हुई अपनी मां को पास बुला लेती है और उन्हें कहती है– **ममा हमारे पास आकर रहो न। हम लोग अपने काम में इतना मसरूफ रहते है– यू अपनी तरफ से कोशिश तो करते है कि उसके साथ ज्यादा वक्त गुजारे, पर हो नहीं पाता, सैकड़ों घर बाहर के धंधे लगे रहते हैं।**

**निष्कर्षत :** भारतीय अपनी लगन और अनथक परिश्रम से समस्त विपरित स्थितियों के बावजूद उन देशों में अपने लिए सम्मानीय जगह बना रहे हैं, भले ही समय–समय पर उन्हें तनावों और अर्न्तद्वन्द्वों से गुजरना पड़ता है । पराई जमीन पर संघर्ष करके सफलता की सीढ़ी चढ़ रहे हैं।

**सन्दर्भ :**

1. उषा राजे सक्सेना, प्रवास में, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
2. उषा प्रियंवदा, सम्बन्ध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. दिव्या माथुर, निशान, प्रवासी दुनिया, (नेट पत्रिका)।
4. अर्चना पेन्यूली, बदल जाती है जिन्दगी, प्रवासी दुनिया, (नेट पत्रिका)।
5. सुषमा बेदी, चिड़िया और चील, झाड़, पराग, नई दिल्ली।
6. विजय शर्मा, प्रवासी हिन्दी साहित्य में किशोरावस्था, कथाक्रम मार्च, 2012।
7. मधु सन्धु, हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।